

उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की खुदी सूरते फ़ौलाद।

— इकबाल



ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल (मासिक)

रजि: RAJH/9396

अंक अक्टूबर : 2009

वर्ष -13

अंक 13

मूल्य 3 रु

वार्षिक 35/- रु.

माहे रमज़ान पर एक नज़र

पाक परवर दिगार के फज़लो करम से माहे रमज़ान पूरी खैरा आफीयत से मुकम्मल हुए और सारे आलम को ईद की मसरत हासिल हुई। उदयपुर में माहे रमज़ान बिना की किसी तल्ख तजुर्बे के मुकम्मल हुए। माहे रमज़ान की खूबीयों का जिक्र हम पिछले शुमारे में दे चुके हैं लिहाज़ा फज़ीलतों की चर्चा करना बेमानी है। जिन कड़वे और मीठे एहसासात से हम दो चार हुए उसका तजकरा पेश है।

नौजवानों की तहरीक में भागीदारी बढ़ाने और इस्माईली अकायद को आम करने के जो कदम बोहरा यूथ उठाये और नौजवानों को मुसलसल इक्टटा कर तहरीक से रूसनाश करवाया उसके नतायज सामने आये। इस बार रसूलपुरा, जैसी बड़ी मस्जिद में मुतवल्ली हमारे नौजवानों ने की जिसे हमारे लोगों ने सराहा। अगर इसी तर्ज पर कोशिश होती रही तो कोठार के इस अल्ज़ाम से बोहरा यूथ पूरी तरह बरी होगा की हमारे पास कोई मुतवल्ली नहीं, कोई आलिम नहीं वगैरह.....

उदयपुर और दीगर मुमालिक में जहां कही हमारी बिरादरी के लोग मौजूद है और उन्होंने सच्चे मन से दामे, दिरहमें सुखने जो खिदमात अज़ाम दी है उन्हें बोहरा यूथ का सलाम।

हमारी बिरादरी का निज़ाम एक सरकार जैसा है। पूरे समाज को व्यवस्थित तरीके से चलाने के लिये उनकी फलाह ओ बेबूदी के लिये कई तरह के काम अज़ाम देता है। समाज चलाने के लिये जो माली इमदाद की ज़रूरत होती है वह सिला, फितराह, वाजिबात, जकात और चर्दें के नाम से लोगों से इसी माह में इक्टटा की जाती है। और हमारे लोग बिना किसी अनुचित दबाव के इसे खैर का काम समझ कर अदा भी करते हैं।

बोहरा यूथ में इस अतिये को इक्टटा करने के लिये लोगों पर कोई दबाव आयद नहीं होता लिहाज़ा अलग-अलग मदों में औसत फी फ़ैमेली अधिकतम 1000/- रुपिया इक्टटा होता है। इसके बरअक्स हमारे शबाब के भाईयों को कुछ ज्यादा ही रकम अदा करना होती है जो अमुमन फी फ़ैमेली करीब 1800 से 2000 होती है। इस साल उदयपुर में शहजादा सहिब जनाब सैइयदुल खैर भाई तशरीफ लायें। आपकी आमद से शबाब के साथियों में नया जोश आया और यह रकम बढ़कर अनुमानत रु 3000 तक पहुंच गयी। कुछ ऐसे तल्ख वाकियात भी सामने आये जहां अकीदत के जोश में शबाब के कारकुन ने लोगों के साथ ज्यादातीयां भी की जिसकी बहुत सी मिसाल हम तक पहुंची है मिसाल में एक बुर्जुग व उनके बेटे वाजिबात जमा करवाने दहलान पर पहुंचे जहां वह अपनी माली परेशानी की रूदाद शहजादा साहिब सैइयादुल खैर भाई साहिब को बयान कर रहे थे। इस बुजुर्ग ने पिछले साल जकात के पेटे करीब रु 75000/- जमा करवाये थे। और आपकी परेशानी के चलते यह रकम और कम करवाना चाहते थे। पर एसा हो नहीं पाया और बुजुर्ग घबड़ा कर अपने बेटे को छोड़ कर चले गये जहां बेटे को रु 83000/- जकात जमा करवाने की डिमांड पेश की गयी। यह मिसाल एक थोपी गयी अकीदत की है क्या शबाब के कारकुन इस थोपी जाने वाली अकीदत से परहेज़ करेंगे?

शबाब के तर्ज पर हमारे यहां माहे रमज़ान में नियाजों के अहतिमाम का सिलसिला पिछले चंद सालों से शुरू हुआ है जो दिनों दिन बढ़ते चला जा रहा है। बोहरा यूथ हमारे लोगों से तकीद करती है। कि नियाजों का अहतिमाम बेशक ज्यादा करें पर सादगी कायम रखते हुए और दीगर खैरो बरकत के कामों में हाथ बटायें।



कार्यालय संवादाता

दाउदी बोहरा जमाअत व बोहरा यूथ (संस्था) के आम चुनाव

दाउदी बोहरा जमाअत की जनरल काउंसिल के लिए 21 सदस्यों का चुनाव होगा, नई कार्यकारिणी सुधारवादी मुहिम को और तेज करेगी।

उदयपुर, दाउदी बोहरा जमाअत व बोहरा यूथ संस्था के मत देने योग्य सदस्यों की सूची का प्रारूप जारी कर दिया गया है। दाउदी बोहरा जमाअत के लिए 21 सदस्यों का चुनाव होगा जो 11 सदस्यों को मनोनीत करेंगे। इस बार 3500 से ज्यादा वोटर चुनाव में मतदान करेंगे। चुनाव बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में होगा।

बोहरा यूथ के अध्यक्ष, हुसैन उदयपुरी ने बताया कि नई कार्यकारिणी सुधारवादी मुहिम को और तेज करेगी। उल्लेखनीय है कि जमाअत 1973 ई. से शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्धविश्वास, रूढ़ीवाद, नारी जागरण व सामाजिक सम्पत्ति के प्रबंधन के विविध कार्यक्रम चला रहा है।

जमाअत के सचिव, अब्बास अलीनाथ 'गुलशन' ने बताया कि नवनिर्वाचित कार्यकारिणी सामूहिक विवाह पर भी जोर देगी। चुनाव प्रचार में बड़ी संख्या में महिला कार्यकर्ता भी भाग लेगी। चुनाव समन्वयक मुश्ताक हुसैन ने बताया कि चुनाव में सभी को समान अवसर प्रदान किया जाएगा।

बोहरा यूथ संस्था के चुनाव भी दाउदी बोहरा जमाअत के साथ होंगे, चुनाव 18 अक्टूबर को होंगे, चुनाव परिणाम उसी रात घोषित किए जाएंगे, चुनाव कन्वीनर याकूब जहिर ने यह जानकारी दी।

निर्वाचन नामावली (वोटर्स लिस्ट) का अन्तिम प्रकाशन

तारीख 3.9.2009 को हमारी जमाअत की निर्वाचन नामावली के प्रारूप के प्रकाशन के सिलसिले में दिनांक 18.9.2009 तक प्राप्त दावों व आपत्तियों के निपटाने के बाद आज दिनांक 22.9.2009 को मूल वोटर्स लिस्ट एवं संशोधित सूचियों का अन्तिम प्रकाशन कर दिया गया है। अब इसी के आधार पर हमारी जमाअत के 10वें आम चुनाव कराये जायेंगे। यह सूची पुनः उन्हीं स्थानों पर आम निरीक्षण के लिये उपलब्ध रहेगी।

हमारी तहरीक का मकसद ही केवल निर्वाचित प्रतिनिधियों के द्वारा समाज के कार्य सम्पादित किया जाना है। इस चुनावों के लिए 30 उम्मीदवारों ने नामजदगी के पर्चे भरे हैं। जिसमें से 21 उम्मीदवारों को चुनना है। उम्मीदवारों के नाम तरतीबवार इस प्रकार से है। अतः आपसे गुज़ारिश है कि चुनाव के दिन अपना सब काम छोड़कर अपने मताधिकार का प्रयोग करें।

अब्बास अली "मास्टर", अब्देअली लोहावाला, आबिद अली अदीब, अकबर अली मण्डीवाला, अनीस मियांजी, असगर अली प्लानावाला, दिलावर अली कांकरोली वाला, डॉ. फरीदा हबीब, फरीदा मोटागामवाला, फ़ैय्याज हुसैन इटारसी, फिदा हुसैन पानवाला/बेगवाला, गुलाम हुसैन कथावाला, हातिम अली अत्तारी "मुनीरा", हुसैन उदयपुरी, डॉ. इसहाक हुसैन शाह, मंसूर अली कर्नल " बाटलीवाला", मेहफूज़ा आर. वी., मोइज़ मेडीवाला, कमरुद्दीन "मण्डीवाला", कमरुद्दीन सायरावाला, रशीदा हकीम, रिहाना जरमनवाला, डॉ रिहाना बानु, सरफराज़ राज, शब्बीर हुसैन नासिर, शब्बीर हुसैन ओगनावाला, वाहिद हुसैन कोतवाला, यूसुफ अली खाण्डवाला, युसूफ अली R. G., जेनुद्दीन बोहरा

मुश्ताक हुसैन
चुनाव कन्वीनर
दाउदी बोहरा जमाअत, उदयपुर

इदारिया पैसों की लत भी बुरी चोट भी बुरी

तारीख गवाह है कि जिन दुनियादार लालची लोगों ने दौलत का पीछा कर उसे हासिल करने की कोशिश की है, तो इसने उन लोगों को तबाह करके ही दम लिया है। क्योंकि इसकी ज्यादाती हमेशा इन्सानियत की राह पर चलने से बिदकती है और शैतानियत के रास्तों पर तेजी से दौड़ती है। दीनदारी और परहेजगारी से मुंह मोड़ती है और बदकारी और आवारगी से रिश्ता जोड़ती है। इन्साफ मांगने वाले मजलूसों से दूर रहती है और जुल्म करने वाले जालिमों के गले लग जाती है। मक्कारी, जालसाजी और ऐश परस्ती के उन गंदे जरासीम जन्म देती है, जो नेकी और इन्सानी बिरादरी के कारनामों को खत्म करने की नापाक हरकतें करते हैं। सखावत के बजाय कंजूसी, इन्साफ के बजाय नाइन्साफी, ईमानदारी के बजाय बेईमानी, रवादारी के बजाय रियाकारी, मुहब्बत की बजाय दुश्मनी को बढ़ावा देने वाली यह तागूती ताकत दुनिया बनी है, तब से खुदा के बन्दों को परेशान करने और गुमराह करने में अपना पूरा जोर लगा रही है। मौलाए-कायनात अली (अ.स.) ने इन्हीं बुराईयों की वजह से इससे दूरी इख्तियार की। आज भी कम ज्यादा हर जगह हर समाज में इसका असर नज़र आता है। लेकिन हमारे समाज में इसकी तेज़ रफ्तारी पूरे शबाब पर है।

पाक-परवरदिगार और रसूले करीम (स.अ.) ने भी सूद को इसलिये हराम किया था कि सूदखोर को इसका फायदा बिना महनत के मिलता रहता है, जिसकी वजह से लालच बढ़ जाती है और लालच जुल्म को जन्म देती है। तब दूसरों के हक पर अपना अधिकार जमाने में आदमी शर्म महसूस नहीं करता। यही सबब भी था कि नबी-वसी जैसी मुकद्दस हस्तियों ने भी हुक्मत के बजाय (वे कर सकते थे) मजदूरी करके भी हलाल की कमाई हासिल करने को जायज़ ठहराया और दुनिया को भी इसी की सीख दी।

अब चूँकि इन्सान शुरू से समाज में रहता आया है। इसलिये एक सेहतमन्द समाज के लिये ज़रूरी है कि उसमें हर शाख के लिये इज़्ज़त से मिल जुल कर ज़िन्दगी गुज़ारने की आज़ादी हो और यह तभी मुमकिन है कि जब अच्छे उसूलों की बुनियाद पर कोई तन्जीम कायम की जाय। इसी बिना पर इस्लामी दुनिया में हर छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, औरत-मर्द के लिये मुनासिब हुक्म और फ़रायज़ कायम किये गये और इन्सानी बराबरी और सबको खुशगवार और इज़्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये 'ज़कात' जैसी पाबन्द लगाई गई। आदमी की ख़ालिस आमदनी पर ढाई फीसदी की यह पाबन्दी पूरी सोसायटी को खुशहाल बनाने के लिये एक साइन्टिफिक तरीका है। जिसे बाहैसियत लोग अगर ईमानदारी से अदा कर दें तो समाज में कोई आदमी भूख और मोहताजगी की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये और ग़ैरों के आगे हाथ फैलाने पर मजबूर नहीं होगा।

फिर यह कि 'ज़कात' की अदायगी इस्लामी उसूल के मुताबिक लाज़मी है और इसका तकाजा भी ज़रूरी है। इस उसूल की तब्लीग बराबर की जानी चाहिये। इसकी वसूली के लिये कमेटियां भी बनाई जा सकती हैं, जो हिसाब-किताब देख कर इसकी रकम मुक़र्रर करे। लेकिन वसूल की हुई रकम की तक्सीम भी बताये गये उसूलों के मुताबिक इन्साफ से की जानी चाहिये।

लेकिन अफ़सोस की बात है कि लोग जिन पर भरोसा करें और अमीन जानें, वही लोग दौलत और इक़तदार (प्रतिष्ठा) के नशे में चूर मग़रूर होकर तानाशाहों की तरह हक़दारों से भी और हैसियतदारों से भी मज़हब की आड़ लेकर मुंह मांगी रकम जबरन धाक-धमकी से वसूल करने की जुरअत करे तो इसे हरगिज़ दीनी और इन्सानी तौर पर जायज़ नहीं ठहराया जा सकता।

ऐसा हर रमज़ान में और इस बार खास तौर से देखने को मिला कि ये मग़रूर और लालची लोग जिन्हें थोड़ी सी भी शह मिल जाती है, उसे ग़नीमत जानकर, 'ज़कात' की वसूली का सहारा लेकर धाक-धमकी से मर्ज़ी मुताबिक वसूली साथ ही अपने सलाम नज़रानों के लिये भारी-भरकम रकम वसूल कर ऐसे चलते बनते हैं जैसे कोई नाजायज़ हरकत करने वाला मौका पा कर खिसक जाता है।

अलबत्ता बोहरा यूथ सुधारवादी तहरीक के मातहत चलने वाली जमाअतों में 'ज़कात' और वाजिबात की वसूली हक़ और हक़दार को उनकी इज़्ज़त और हैसियत को ध्यान में रख कर की जाती है, तो साफ़ नज़र आता है कि लोग इन वाजिबात की अदायगी पर मुत्सइन नज़र आते हैं। इस पालिसी की हिमायत की जानी चाहिये। फिर भी अगर कोई मुक़र्रर: ज़कात की अदायगी में कोताही करता है तो अल्लाह के यहां जवाबदार है।

पैसों की लालच जबर्दस्ती और धमकी की वसूली से लोगों में बेचेनी पैदा होती है, विश्वास में कमी आती है, बचने के बहाने बढ़ने लगते हैं, बोलने की ताकत खत्म हो जाती है। गुलामी की जंजीरे जकड़े हुए होते रह जाती हैं, मायूसियां ही मायूसियां।

ज़ाहिर है कि पैसों की लत में फंस कर लालच में अल्लाह के बन्दों पर जुल्म करने वाला शक्स शैतान का मददगार और इंसान का दुश्मन है और उसकी ज़द में आया हुआ शक्स चोट खाए हुए ज़ख्मी शिकार की तरह बेबस और मजबूर हो जाता है।

लिहाजा पैसों की लत भी बुरी और पैसों की चोट भी बुरी। बोहरा यूथ की तहरीक इन दोनों लतों से बचाव की ही असरदार तदबीर है।

- आबिद अदीब

स्कूल में जयंती मनाई गई

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में राष्ट्रपिता गांधीजी और लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती मनाई गई, जिसकी अध्यक्षता बोहरा यूथ के अध्यक्ष, श्री हुसैन उदयपुरी ने की, इस अवसर पर छात्र छात्राओं ने उनके जीवन पर रोशनी डाली।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री हुसैन उदयपुरी ने कहा कि महात्मा गांधी के मार्ग दर्शन को हम आज भी अपना नहीं रहे हैं, आज भी छुआछुत और सामाजिक बहिष्कार जैसी लानत हमारे समाज में मौजूद है। आज भी हमारा समाज इन से कलंकित है। इस अवसर पर सरकार और हमारे सभी क्षेत्रों के नेताओं को चाहिए कि वे इन बुराइयों को दूर करे और सामाजिक तथा आर्थिक सुधार के कदम उठाये तभी हम सही मानों में गांधी जयंती मना सकेंगे।

प्रधानाचार्य श्री कमरुद्दीन चिश्ती व अन्य शिक्षकों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। स:टीचर श्रीमती विजय आमेटा ने धन्यवाद दिया।

ख़िराजे अकीदत

एक दोस्त की अपने अज़ीज़ दोस्त, यूथ के जांबाज़ सिपाही मर्द मुजाहिद - मरहूम हाजी फिदा हुसैन रंगवाला से फरियाद कौन कहता है फिदा, तू यूथ का हामी न था। मैं ये कहता हूँ कि तुझसा कोई सैनानी न था।

था हकीकत में तू इक जाँबाज़ यूथी यूथ का।

वलवला और जोश में तेरा कोई सानी न था।

- ए फिदा तू हो गया मुझसे जुदा, तुझपे मेरी जान है हरदम फिदा
- तू मेरा मामू भी था और दोस्त भी, यूँ किया क्या दोस्ती का हक अदा।
- रिश्ता तेरा और मेरा था अटूट, टूट ये कैसे गया तू ही बता।
- साथ था बचपन से तेरा और मेरा, छोड़ कर क्यूँ हो गया तुझसे जुदा।
- तुझसा हमदम पाऊँगा अब मैं कहाँ, घर पे आकर जो मुझे देगा सदा।
- बाद तेरे है मेरा हमराज़ कौन, हाले दिल किससे कहूँगा बरमला।
- हम निवाला, हम प्याला, हमनशी, और तू था हम सफर मेरा सदा।
- भूल कर भी मैं न भूलूँगा तुझे, याद तेरी आएगी मुझको सदा।
- अब मनाऊँगा मैं किसके साथ ईद, जब तू कोसों दूर मुझसे जा बसा।
- ग्यारह रमजानुल मुबारक दस बजे, कह दिया दुनिया को तूने अलविदा।
- दारे फानी को तू कह कर ख़ैरबाद, चल दिया तू जानिबे दारे बका।
- बस गया तू जाके क़ब्रस्तान में, ले लिया तूने वहाँ पर घर नया।
- अब करूँगा किसका या रब इंतज़ार, मुन्तज़िर था जिसका मैं, वो चल बसा।
- ख़्वाब में भी ये कभी सोचा न था, ये अचानक कैसे या रब हो गया।
- बाद मुद्दत भूल जाएंगे सभी, मैं न भूलूँगा तुझे तादम फिदा।
- याद जब भी तेरी मुझको आएगी, फातिहा तुझ पर पढ़ूँगा मैं सदा।
- याद रखूँगा मैं हरदम वो घड़ी, जिस घड़ी था तू हुआ मुझसे विदा।
- हो गया नज़रों से तू ओझल तो क्या, ख़्वाब में देखूँगा मैं तुझे सदा।
- जब्त करता हूँ बहुत पर क्या करूँ, ग़म से दिल रहता है बेकाबू सदा।
- या इलाही है ये यूसुफ की दुआ, करदे रोशन दोस्त का तू घर नया।

- युसुफ अली आर.वी.

Best Compliments From :

ख़ाँजीपीर मेमोरियल ट्रस्ट, उदयपुर

अपने इदारों की मज़बूती और ज़रूरत

मब्दों की मदद के लिये ट्रस्ट फण्ड

में चंदा देकर सवाब हासिल करें।

सम्पर्क : आबिद हुसैन अदीब (मेनेजिंग ट्रस्टी)

हज व उमराह

हज व उमराह दोनों गुनाहों को इस तरह दूर करते हैं जैसे आग की भट्टी लोहे के मेल को दूर करती है। हज को तर्क करना, छोड़ देना इस्लाम का तरीका नहीं है। उम्र भर में एक बार हज करना फर्ज है और औरत के साथ उस के मेहरम का होना ज़रूरी है।

मस्जिद हराम में लम्बेक कहते हुए दाखिल होना चाहिए। जब खाना ऐ काबा को देखे तो दुआ मागे, फिर तवाफ करे, औरत अहराम में सर ढांके और मुँह खुला रखे।

जिस किसी को हज करने का इरादा हो उसको जल्दी करना चाहिए। कभी आदमी बीमार हो जाता है, कभी सवारी का इन्तज़ाम नहीं होता, कभी और कोई ज़रूरत पेश आती है। यानि कई वजुहात की बिना पर हज से महरूम हो जाता है।

हज और उमराह एक ऐसी इबादत है जो बैतुल्लाह शरीफ और मक्के के अलावा आम जगहों पर सर अंजाम नहीं दी जा सकती। हज के तमाम अफआल ज़िल हिज्जा के दिनों में अदा किए जाते हैं। यानि दूसरे दिनों में हज अदा हो ही नहीं सकता और उमराह इन दिनों के अलावा साल भर में हर वक्त अदा किया जा सकता है।

अल्लाह की रहमत है उस शख्स पर जिसे अल्लाह अपने घर के हज के लिए तौफिक अता फरमाए क्योंकि यह बड़े किस्मत और मुकद्दर की बात है।

हज का पहला रूकन अहराम है। दूसरा मैदाने आराफात में ठहरना, तीसरा तवाफे ज़यारत है, सात चक्कर को एक तवाफ कहते हैं, जिसमें सफा व मरवा भी शामिल है। हर तवाफ के चक्कर की अलग अलग दुआएं हैं। कुर्बानी भी ज़रूरी है। थक जाने पर आब ज़मज़म किबला रूख होकर बिस्मिल्लाह पढ़ कर पीना चाहिए और आखिर में बचा हुआ पानी चेहरे और बदन पर मल ले। रसुले अल्लाह का इरशादे गामी है कि ज़मज़म का पानी जिस मकसद के लिए पिया जाए वही मकसद पूरा होगा।

मदीना मुनव्वरा हाज़िर होकर रसूले खुदा (सलल्लाहो अलेह वसल्लम) के रोज़ाए मुबारक और मस्जिदे नबवी की ज़ियारत से बरकत हासिल करे। आप ने फरमाया जो शख्स इसमें एक बार नमाज़ पढ़े उसको दस हज़ार नमाज़ों के बराबर सवाब मिलेगा। जिस शख्स ने मस्जिदें नबवी में 40 चालीस नमाज़े अदा की वोह दोजख के अज़ाब से बरी कर दिया गया। सिर्फ तीन ही मस्जिदें ऐसी

है, जिन की जियारत के लिए सफर किया जा सकता है। एक मस्जिदुल हराम, दूसरी मस्जिदे नबवी, तीसरे मस्जिदे अकसा यानी बैतुल मुकद्दस की मस्जिद।

ज़ियारत रोज़ाए अकदस रसूलल्लाह का आसताना है। जहाँ की ज़ियारत से दिल को सुकून मिलता है। इसलिए जिसे अल्लाह के घर जाने की तौफिक मिल जाए उसे रोज़ा ए अकदस की ज़ियारत से शरफयाब होना चाहिए। हिज़रत के बाद रसूल अल्लाह मदीने में रहे। यही आपने मस्जिदे नबवी बनाई। यहाँ की हाज़री दीनों दुनिया की फलाह व सआदत है।

यह शफाअत का ज़रिया बनेगी, इसलिए मदीना मुनव्वरा की हाज़री बहुत ज़रूरी है। मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत के बगैर वापस लौट आना सख्त महरूमी और बदबख्ती है।

ज़ियारत जन्नतुल बफीअ: जन्नतुल बफी मदीना मुनव्वरा का मशहूर कब्रिस्तान है, जो रसूल अल्लाह के अहद का है। यह मस्जिदे नबवी के बिल्कुल करीब है, इसमें अहले बैत, चन्द अज़वाजे मुसहरान और बेशुमार जलीलुल कद्र सहाबा कराम की कब्रें हैं। एक रिवायत के मुताबिक दस हज़ार से ज्यादा सहाबा कराम इस कब्रिस्तान में दफन हैं। जन्नतुल बकी में एक मुकाम पर हज़रत फातिमा बिनते रसूलल्लाह (स.अ.) आप के चाचा हज़रत अब्बास, हज़रत इमामे हसन (अ.स.) इमाम जैनुल आबेदीन, माम महमदुल बाकिर (अ.स.) इमाम जाफर सादिक (अ.स.) की कब्रें मुबारक हैं। थोड़े फासलें पर रसूल अल्लाह की साहबज़ादियों हज़रत रुकैया, हज़रत जैनब और हज़रत कुलसुम की कब्रें हैं। साथ ही हज़रत अकील इब्ने अबी तालिब और हज़रत फातिमा बिनते असद की कब्रें हैं। मशहूर सहाबी हज़रत जाफरे तैयार की कब्र है और आप के साहिबज़ादे हज़रत इब्राहिम की कब्र हैं। शोहदाए अहद की भी कब्रें हैं।

हर हाजी का फर्ज है कि जब वह हज के लिए जाए तो अपने ऊपर जिस किसी का कर्ज़ हो चुका कर जाए। अगर किसी की दिल शिकनी हुई हो तो माफी मांग कर जाये। हज के लिए जाने वाले हाजी बेखयाली में अपने ऊपर एक कर्ज़ लेकर जाते हैं, जिसका ख्याल अकसर हाज़ियों को नहीं रहता और वो कर्ज़ है, दुआओं का, सलाम का हाजी तमाम लोगों से वादा करके हज को जाता है कि मैं तुम्हारे लिए दुआ करूंगा अगर हाजी साहिबान खयाल करें तो पता चलेगा कि कितना बड़ा कर्ज़, हक और अमानत अपने साथ लेकर जाते हैं। जब तक उन लोगों के लिए दुआ न करेंगे इस कर्ज़ की और हुकूक की अदायगी न होगी।

- हुसैन उदयपुरी

मौला अली का शहादत दिवस मनाया

बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमात की ओर से मजलिसे शहादत अमीरुल मूमिनीन हज़रत मौला अली का शहादत दिवस मस्जिदे वजीहपुरा में मोहतरम जनाब मुल्ला पीर अली साहब की सदरत में मनाया गया।

मजलिस की शुरुआत कुरआनेपाक की तिलावत से हुई ज़ाकिने मौला अली (अ.स.) ने अपने कलाम से माहौल को रूहानी बना दिया। इस दौरान वाअज़, तकरीरे व नियाज हुई तथा मौला अली के सादा जीवन एवं उच्च विचारों पर रोशनी डाली गई। उनकी फज़ीलतों का ज़िक्र किया गया तथा उनकी पुस्तक नहजुल बलागाह के संदेश को घर-घर पहुंचाने की बात कही गई।

मजलिस का समापन दुआईयां कलेमात के साथ हुआ व सुधारवादी आंदोलन को फैलाने और मजबूत करने व मुल्क में अमन चैन एवं खुशहाली के लिए दुआएं मांगी गईं।

Honour for Nasreen Sabeelwala

Nasreen Sabeelwala, wife of Zulfiquar Sabeelwala and a resident of Udaipur, was recently bestowed upon an award for Best Teacher. This was on the occasion of Teacher's Day at a function held at Sukhadia Rangmanch, a programme organized by Dainik Bhaskar newspaper and Geetanjali Medical College and Hospital (GMCH).



Nasreen has been associate with the teaching faculty for the last nine years and therefore, it is a great achievement for her to have been given this award in such a short span of time.

The Bohra Youth community wishes her all the best in all her future endeavours!



बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी उदयपुर (राज.)

Phone No. 0294-2424886

DR. ISHAQ HUSSAIN SHAH (M.B.B.S., M.S.)

वरिष्ठ सर्जन (जनरल सर्जरी इन्चार्ज)

रोज़ सुबह 9.00 से 12.30 बजे एवं शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. REHANA BANU (M.B.B.S., M.S.)

स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)

रोज़ सुबह 8.30 से 12.00 बजे तक

DR. KULSUM SHAH (M.B.B.S., M.S.)

स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)

रोज़ शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. FATIMA SIRAJ (M.B.B.S., D.G.O)

स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)

रोज़ दोपहर 12.00 से 1.00 बजे तक

DR. CHANDRA CHAPLOT (M.B.B.S. M.S.)

ड. एन. टी. विशेषज्ञ

सुबह 8.30 से 9.30 बजे तक

हमारे यहां सोनोग्राफी, खून, पेशाब और सभी तरह की जांचे न्यूनतम लागत में की जाती है। प्राथमिक उपचार हेतु दवाईयाँ मुफ्त प्रदान की जाती है।

खतना की सुविधा उपलब्ध है।

Letter to the Editor :

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words and addressed to: The Editor: All World Bohra Journal; 73, Dr Zakir Hussain Marg, Udaipur 313001 or email: Bohra.journal@hotmail.com

Expert Speak

Every month we bring you a regular column on management studies by a management expert in the hope that it benefits our young readers.

The Balanced Scorecard - Measures That Drive Performance - I

The scorecard tracks the key elements of a company's strategy from continuous improvement and partnerships to teamwork and global scale.

What you measure is what you get. Senior executives understand that their organisation's measurement system strongly affects the behaviour of managers and employees. Executives also understand that traditional financial accounting measures like return-on-investment and earnings-per-share can give misleading signals for continuous improvement and innovation-activities today's competitive environment demands. The traditional financial performance measures worked well for the industrial era, but they are out of step with the skills and competencies companies are trying to master today.

As managers and academic researchers have tried to remedy the inadequacies of current performance measurement systems, some have focused on making financial measures more relevant. Others have said, "Forget the financial measures. Improve operational measures like cycle time and defect rates - the financial results will follow".

But managers should not have to choose between financial and operational measures. Senior executives do not rely on one set of measures to the exclusion of the other. They realize that no single measure can provide a clear performance target or focus attention on the critical areas of the business. Managers want a balanced presentation of both financial and operational measures.

Kaplan and Norton* devised a "balanced scorecard" - a set of measures that gives top managers a fast but comprehensive view of the business. The balanced scorecard includes financial measures that tell the results

of actions already taken. And it complements the financial measures with operational measures on customer satisfaction, internal processes and the organization's innovation and improvement activities - operational measures that are the drivers of future financial performance.

The balanced scorecard allows managers to look at the business from four important perspectives. It provides answers to four basic questions:

1. How do customers see us? (customer perspective)
2. What must we excel at? (internal perspective)
3. Can we continue to improve and create value? (innovation and learning perspective)
4. How do we look to shareholders? (financial perspective)

While giving senior managers information from four different perspectives, the balanced scorecard minimizes information overload by limiting the number of measures used. Companies rarely suffer from having too few measures. More commonly, they keep adding new measures whenever an employee or a consultant makes a worthwhile suggestion. One manager described the proliferation of new measures at his company as its "kill another tree program". The balanced scorecard forces managers to focus on the handful of measures that are most critical.

Scorecards have demonstrated that it meets several managerial needs. First, the scorecard brings together, in a single management report, many of the seemingly disparate elements of a company's competitive agenda: becoming customer oriented, shortening response time, improving quality, emphasizing teamwork, reducing new product launch times and managing for the long term.

Second, the scorecard guards against sub optimization. By forcing senior managers to consider all the important operational measures together, the balanced scorecard lets them see whether improvement in one area may have been achieved at the expense of another. Even the best objective can be achieved badly. Companies can reduce time to market, for example, in two very different ways: by improving the management of new product introductions or by releasing only products that are incrementally different from existing products. Spending on setups can be cut either by reducing set-up times or by increasing batch sizes. Similarly, production output and

first-pass yields can rise, but the increases may be due to a shift in the product mix to more standard,

easy-to-produce but lower-margin products.

Companies can create their own balanced scorecard.

- Robert S. Kaplan/David P. Norton

Robert S. Kaplan is the Arthur Lowes Dickinson Professor of Accounting at the Harvard Business School. David P. Norton is president of Nolan, Norton & Company, Inc., a Massachusetts-based information technology consulting firm he co founded.

Part II next month

राजसिंह डूंगरपुर के निधन पर बोहरा यूथ की ओर से श्रद्धांजली

बोहरा यूथ संस्थान, दाउदी बोहरा जमात एवं बेस क्रिकेट अकादमी की ओर से भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष राजसिंह डूंगरपुर के निधन पर शोक व्यक्त कर उन्हें श्रद्धांजली दी गई।

पिछली बार उनके उदयपुर आगमन में बेस क्रिकेट अकादमी में अपने विचार व्यक्त किए। कर बेस अकादमी के कार्यों को साराहते हुए खिलाड़ियों को क्रिकेट के गुर सिखाए और कहा था कि राजस्थान में क्रिकेट का स्तर सुधारने का प्रयास कर खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाना होगा, ताकि उनका प्रदर्शन का स्तर अच्छा एवं ऊँचा हो।

उन्होंने बोहरा यूथ के कार्यों को साराहते हुए कहा था कि शिक्षा जगत के साथ साथ खेल जगत में भी अपनी सेवाएं प्रदान कर राष्ट्र निर्माण में उत्तम योगदान दे रहा है और सभी धर्म एवं वर्गों के खिलाड़ी यहाँ प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाउदी बोहरा कम्युनिटी, दाउदी बोहरा वेलफेयर सोसाईटी एवं स्टूडेंट वेलफेयर सोसाईटी के सदस्यों ने भी अपनी श्रद्धांजली अर्पित की।

- हुसैन उदयपुरी

कवि हरिश भादानी के निधन पर श्रद्धांजलि

बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमात की ओर से जन कवि हरिश भादानी के निधन पर शोक व्यक्त कर उन्हें, श्रद्धांजलि दी गई, श्री हरिश भादानी सुधारवादी आंदोलन से जुड़े रहे, उन्हें बोहरा सुधारवादी आंदोलन से विशेष लगाव रहा और इसी कारण बोहरा यूथ के सम्मेलन एवं मीटिंगों में भी अपनी हाज़री दी। उन्होंने अपनी कलम से बोहरा सुधारवादियों की आवाज़ को जन-जन तक पहुँचाया। वह अपनी प्रतिभा व प्रभावशाली व्यक्तित्व से साहित्य एवं सामाजिक क्षेत्र में सर्वमान्य मार्ग दर्शन देते रहे।

एक सच्चे इन्सान की तरह सभी वर्गों को समान रूप से सम्मान देते रहे। उन्होंने जन चेतना जगाने का जो काम किया है, वह अविस्मरणीय है।

सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्युनिटी, बोहरा यूथ, दाऊदी बोहरा जमात एवं उनकी सभी ईकाईयों के सदस्यों ने भी उन्हें याद करते हुए हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त की हैं।

Season's Greetings.

ZAIN UDAIPURI

Advocate

Rajasthan High Court.

Office : 4-NAIWADA, BOHRAWADI, UDAIPUR

Resi : 36- Neemach Kheda, Devali, UDAIPUR

0294 - 6453393 - Cell. 98280- 45857



THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans
We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch

Ph: 0294 2422461 M: 9928790762

Dhan Mandi Branch

Ph: 0294 2422355 M: 9828162044

Bada Bazar Branch

Ph: 0294 2420429 M: 9414738065

Fatehpura Branch

Ph: 0294 2450762 M: 9828195535

Madhuvan Branch

Ph: 02942423542 M: 9460402651

Hiran Magri Branch

Ph: 0294 2460893 M: 9414786877

Krsihi Mandi Branch

M: 946030453

Rajsamand Branch

Ph: 95 2952 224022 M: 9460415822

Salumber Branch

Ph: 95 2906 231250 M: 979903464

Fateh Nagar Branch

Ph: 95 2955 220316 M: 9929996972

कुरान, अहादीस और नहजुल बलाग़ह – II

Continued from last month

हालांकि कायनात (ब्रह्माण्ड) का गोशा-गोशा (कोना-कोना) उस की सिफतों (गुणों) के आसार (लक्षणों) से छलक रहा है और मख्लूकात (सृष्टि) का ज़र्रा-ज़र्रा (कण-कण) गवाही दे रहा है कि वह जानने वाला है, कुदरत वाला (शक्तिवाला) है, सुनने और देखने वाला है और अपने दामने रूबूबीयत में पालने वाला और सायए रहमत (दया की छांव) में परवान चढ़ाने वाला है। बल्कि मक़सद (उद्देश्य) यह है कि उस की ज़ात में अलग से कोई ऐसी चीज़ तजवीज़ (प्रस्तावित) नहीं की जा सकती कि उसे सिफत (गुण) से तअबीर करना (कष्ट कल्पना करना) सही हो, क्योंकि जो ज़ात है वही सिफत है और जो सिफत है वही ज़ात है।

इसी मतलब (अर्थ) को इमाम जअफ़रे सादिक अलैहिस सलाम की ज़बाने फ़ैज़ तर्जमान (लाभावित करने वाली ज़बान) से समाअत फ़रमाइये (सुनिये) और फिर मज़ाहिबे आलम (संसार भर के धर्मों) के अकीदए तौहीद (अद्वैतवाद के विश्वास) को उसकी रौशनी (प्रकाश) में देखिये और परखिये कि तौहीद के सहीह मफ़हूम (अभिप्राय) से रूशनास (परिचित) कराने वाली फ़र्दे (व्यक्तिगण) कौन थी। चुनांचे आप फ़रमाते हैं :-

“हमारा खुदाए बुजुर्ग व बरतर हमेशा (सदैव) से एने इल्म (ज्ञान स्रोत) रहा। हालांकि मालूम (ज्ञात) अभी कत्मे अदम (अनस्तित्व कक्ष) में था, और ऐपे समूओ बसर (मुख्य अवलोकन एवं श्रवण स्रोत) रहा। हालांकि न किसी आवाज़ (स्वर, ध्वनि) की गूँज बुलन्द हुई थी और न कोई दिखाई देने वाली चीज़ थी। और एने कुदरत (मुख्य शक्ति) रहा हालांकि कुदरत के असरात (प्रभावों) को कबूल करने वाली कोई शई (वस्तु) न थी। फिर जब उस ने इन चीज़ों को पैदा किया (उत्पत्ति की) और मअलूम (ज्ञात) का वुजूद (अस्तित्व) हुआ तो उस का इल्म (ज्ञान) मअलूमात (जानकारियों) पर पूरी तरह मुत्तबिक (पूर्णरूपेण चरितार्थ) हुआ। ख़्वाह (चाहे) वह सुनी जाने वाली सदाए (ध्वनियाँ) हो या देखी जाने वाली चीज़ें हो और मक़दूर (सामर्थ्य के तअल्लुक संबंध) से उस की कुदरत (शक्ति) नुमायां (प्रकट) हुई।”

यह वह अकीदा (विश्वास) है जिस पर अइम्माए अहले बैत (अ.स.) का इज़्माअ (एकमत) है मगर सवादे आज़म ने इस के खिलाफ़ (विरुद्ध) दूसरा रास्ता (मार्ग) इख़्तियार किया (अपनाया) है और ज़ातो सिफ़ात (अस्तित्व एवं गुणों) में अलायहिदगी (पृथकता) का तसव्वुर (कल्पना) पैदा (उत्पन्न) कर दिया है। चुनांचे शहरिस्तानी ने तहरीर किया है (लिखा है) : “अबुल हसनने अश़री कहते हैं कि बारी तआला इल्म (ज्ञान), कुदरत (शक्ति), हयात (जीवन), इरादा, कलाम (वाणी) और समूओ बसर (अवलोकन एवं श्रवण शक्ति) के जरीए (द्वारा) आलिम (ज्ञानी), जिन्दा (जीवित), मुरीद (इरादा रखने वाला), मुतकल्लिम (बोलने वाला) और समीइ व बसीर (सुनने व देखने वाला) है।”

अगर सिफ़तों (गुणों) को इस तरह (प्रकार) ज़ाइद बर ज़ात (अस्तित्व से पृथक) माना जायेगा तो दो हाल (दशाओं) से खाली (रिक्त) नहीं, या तो यह सिफ़तें (विशेषतायें) हमेशा (सदैव) से उसमें होगी या बाद में तारी (व्याप्त) हुई होगी। पहली सूरत (स्थिति) में जितनी उस की सिफ़तें (विशेषतायें) मानी जायेगी उतने ही क़दीम (पुरातत्व) और मानना पड़ेंगे। जो क़दामत (प्राचीनता) में उस के शरीक (सहयोगी) होंगे “तआल्लाहो अम्मा युशरेकून।

और दूसरी सूरत में उस की ज़ात को महल्ले हवादिस (घटनाग्रस्त) करार देने के अलावा यह लाज़िम आयेगा (आवश्यक होगा) कि वह इन सिफ़तों (गुणों) के पैदा (उत्पन्न) होने से पहले न आलिम (ज्ञानी) हो, न कादिर (शक्तिमान) न

समीइ (सुनने वाला) न बसीर (न देखने वाला) और यह अकीदा (विश्वास) असासी तौर पर (मौलिक रूप से) इस्लाम के खिलाफ़ (विरुद्ध) है।

कुरआने मजीद के अहकाम (अनुदेशों) के सिलसिले (विषय) में फ़रमाते हैं कि उस में हलाल व हराम का बयान (वर्णन) है जैसे, ‘अहल्लल्लाहल बैअ व हरमर रिबा,’ (अल्लाह ने खरीद व फ़रोख़्त (क्रय विक्रय) को ज़ाइज़ किया है और सूद (ब्याज) को हराम (निषिद्ध) कर दिया है। उस में फ़राइज़ व मुसतहब्बात का ज़िक्र (घर्वा) है जैसे, “जब नमाज़े (ख़ौफ़) अदा कर चुको तो उठते बैठते अल्लाह को याद करो और जब (दुश्मन की तरफ़ से) मुत्मइन (संतुष्टि, निश्चिन्त) हो जाओ, तो फिर मअमूल के मुताबिक़ (नित्य की भांति), नमाज़ पढ़ा करों।”

नमाज़ फ़र्ज़ है और दूसरे अज़कार (अराधनाएं, जाप इत्यादि) मुसतहब हैं। उस में नासिख व मन्सूख भी हैं, जैसे इदत वफ़ात चार महीने दस दिन (पति की मृत्यु के बाद विधवा के लिये वह अवधि जिस में उसे दूसरा विवाह करने से रोका गया है।) जिससे ज़ाहिर (प्रगट) होता है कि इदत वफ़ात एक साल है। उस में मख़सूस मवाके (विशेष परिस्थितियों) पर हराम चीज़ों के लिये रूख़सत व इजाज़त (अवकाश व आज्ञा) भी है जैसे, “अगर कोई शख्स (व्यक्ति) बहालते मज़बूरी (विवश होकर) हराम चीज़ों में से कुछ खा ले तो उस पर कोई गुनाह (पाप) नहीं दरां सूरते कि (उन परिस्थितियों में कि) हुदूदे शरीअत (शरीअत की सीमाओं) को तोड़ना और उन से मुतजाविज़ होना (उल्लंघन करना) न चाहता हो।”

उस में अटल अहकाम भी हैं जैसे “ला युशरिको बे इबादते रब्बेही अहदा, (चाहिए कि वह अपने पर्वरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न करे)। उसमें खासो आम भी हैं। ‘खास’ कि जिस के लपज़ (शब्द) में वुसअत (फ़ैलाव) हो और मअनिए मक़सूद (तात्पर्य) का दाइरा (परिधि) महदूर (सीमित) हो जैसे, “इन्नी फ़ज्ज़ल्लोकुम अलल आलमीन (ए बनी इसराईल हम ने तुम्हें आलमीन पर फ़ज़ीलत दी है) इस में आलमीन से सिर्फ़ उन्हीं का ज़माना (युग) मुराद (अभिप्राय) है अगरचे लपज़ (शब्द) तमाम जहानों को शामिल है और ‘आम’ वह है जो अपने मअनी (अर्थ) में फ़ैलाव रखता हो जैसे, “वलाहो बेकुल्ले शैइन अलीम” (अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है) उस में इब्रतें (शिक्षा) और मिसालें (उदाहरण) भी हैं जैसे, “फ़अख़ज़ल्लाहा नकालल आख़िरते वलऊला इन्ना फ़ी ज़ालिका लइब्रतल ले मैय्यख़शा (खुदा ने उसे दुनियां व आख़िरत के अज़ाब में धर लिया। जो अल्लाह से डरे उस के लिये इस में इब्रत का सामान है) और मिसालें भी हैं जैसे, “मसलुल लज़ीना मुनफ़ेकूना अमवालहुम फ़ी सबीलिल्लाहे कमसले हब्बतिन अंबतत सबअ सनाबिला फ़ी कुल्ले सुंबुलतिन मेअतिन हब्बतिन” (जो लोग अल्लाह की राह में अपना माल खर्च करते हैं उनकी मिसाल उस बीज की सी है जिस से सात बालें निकलें और हर बाल में सौ सौ दाने हों) उसमें मुत्लक व मुक़ैयद हैं।

मुत्लक वह कि जिसमें किसी किस्म की तक़ैयद व पाबन्दी न हो जैसे “व इज़ काला मूसा लेकौमेही इन्नाल्लाहा यामुरोकुम अन तज़बहू वकरह” (उस मौक़े को याद करो जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि तुम्हें अल्लाह का यह हुक्म है कि तुम कोई सी गाय ज़ह करो।) और मुक़ैयद कि जिस में तशख़ुस व क्यूद की पाबन्दी हो जैसे, “इन्हू यकूलो इन्हा बकरतन ला ज़लूलो तुसीरुल अर्जा व ला तुसक़िल हर्स” (अल्लाह फ़रमाता है कि वह ऐसी गाय हो जो न हल में जोती गई हो और न उस से खेतों को सींचा गया हो उसमें मोहकम व मुतशाबेह भी हैं। मोहकम वह कि जिस में कोई गुंजलक न

हो, जैसे, “इन्नाल्लाहा अला कुल्ले शयइन क़दीर” (बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है) और मुतशाबेह वह कि जिस के मअनी (अर्थ) उलझे हुये हों जैसे, “अरहमानो अलल अर्शिस्तवा” जिसके ज़ाहिर मफ़हूम (प्रत्यक्ष तात्पर्य) से यह तवहहुम (भ्रम) भी होता है कि वह जिस्मानी तौर (शारीरिक रूप) से अर्श पर बरकरार (विद्यमान) है लेकिन मक़सूद (अभिप्राय) ग़लबा व सतल्लुत (आधिपत्य व अधिकार) है।

उस में बअज़ अहकाम मुज़्मल (संक्षिप्त) हैं जैसे “अकीमुस सलाह” (नमाज़ काइम करो)। उसमें गहरे मतालिब (अर्थ) भी हैं जैसे वह आयात कि जिन के मुतअल्लिक कुदरत का यह इर्शाद है कि “ला यअलमो तावीलोहू इल्लल्लाहा वरसिखूना फ़िल इल्म” (इन की तावील को अल्लाह और सूल और इल्म गहराइयों में उतरे हुये लोगों के अलावा कोई दूसरा नहीं जानता), फिर एक दुसरे उनवान से तफ़सील (विवरण) बयान फ़रमाते हैं कि इस में कुछ कुछ चीज़ें वह हैं जिन का जानना ज़रूरी है जैसे, “फ़अलम इन्हू ला इलाहा इल्लल्लाह” (इस बात को जान लो कि अल्लाह के अलावा कोई मअबूद नहीं) और कुछ चीज़ें वह हैं जिन का जानना ज़रूरी नहीं है जैसे अलिफ़ लाम मीम वग़ैरा और इस में कुछ अहकाम ऐसे हैं जो सुन्नते पैग़म्बर (स.) से मन्सूख़ (निरस्त) हो गए हैं जैसे, “वललाती यातीनल फ़ाहिशता मिन निसाइकुम फ़सतशहदू अलैहिन्ना अर्बअतिन मिनकुम फ़इन शहेदू फ़मसेक़हुन्ना फ़िल बुयूते हत्ता यतवफ़ाहुन्नल मौत” (तुम्हारी औरतों में से जो बदचलनी की मुर्तकिब हों, उन की बदकारी पर अपने आदमियों में से चार की गवाही लो और अगर वह गवाही दें तो ऐसी औरतों को घरों में बन्द कर दो यहां तक कि मौत उनकी जिन्दगी खत्म कर दे), यह सज़ा अवाइले इस्लाम में थी, लेकिन बाद में शौहरदार औरतों के लिये इस हुक्म को हुक्मे रज्म (पथराव के आदेश) से मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया गया।

उस में कुछ ऐसे अहकाम हैं जिन से सुन्नते पैग़म्बर (स0) मन्सूख़ (निरस्त) हो गई जैसे, “फ़वल्ले वज़हका शतरल मसज़िदिल हराम” (चाहिये कि तुम अपना रूख मस्जिदे हराम की तरफ़ मोड़ लो), इस से बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ रूख़ करने का हुक्म मन्सूख़ कर दिया गया। इस में ऐसे अहकाम भी हैं जो मुकर्रर वक्त (निश्चित समय) पर वाजिब होते हैं और उस से उन का वुजूब बाकी नहीं रहता, जैसे “व इज़ा नूदिया लिस-सलाते मियौमिल जुमुअते फ़सूओ इला ज़िक्रिल्लाह” (जब जुमा के दिन नमाज़ के लिये पुकारा जाय, तो ज़िक्र इलाही की तरफ़ बढ़ो।)

इसमें हराम कर्दा चीज़ों की तफ़रीक (भिन्नता) भी काइम (स्थापित) की गई है। जैसे गुनाहों का सगीरा व कबीरा (छोटा व बड़ा) होना जैसे, “कुल लिल मोमिनीना यगुज्जू मिन् अब्सारेहिम (ईमान वालों से कहा कि वह अपनी आंखें नीची रखें), और कबीरा जैसे, “व मैयुक्तला मोमिनीन मुतअम्मेदन फ़जज़ाऊहो जहन्नामा ख़ालिदन फ़ीहा” (जो शख्स किसी मोमिन को जान बूझ कर मार डाले उस की सज़ा दोज़ख़ है, जिस में वह हमेशा रहेगा), इस में उन अअमाल (कर्मों) का भी ज़िक्र है जिन का थोड़ा सा भी बजा लाना किफ़ायत करता है (पर्याप्त है) और ज़्यादा से ज़्यादा बजा लाने की भी गुंजाइश है, जैसे “फ़क्रऊ मा तयस्सरा मिनल कुरआन”, (जितना बआसानी कुरआन पढ़ सको उतना पढ़ लिया करो)।

(तहता कलामिल ख़ालिक व फौका कलामिल मख़लूक – ईश्वर वाणी (कुरान) से नीची और मनुष्य वाणी से उच्च स्थान वाली पुस्तक है नहजुल बलाग़ह)

माखुज़- हिन्दी अनुवाद- सै. मो. हामिद रिजवी ‘करारवी’, प्रकाशक – तब्तीगाते ईमानी, मुम्बई

- मन्सूर अली बोहरा

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy *Muslim Women's Newsletter*.

A lecturer who gave up a college job to set up a school for girls in her village

Shamima Khatoon taught Urdu at the Ranchi Women's College for a few years before deciding to quit. She left the college to set up a school. In a year or so of leaving her job, Khatoon founded the Shamima Urdu Girls School in Itki, 25 km from Ranchi, in 1974. Education was a cherished goal not just of Khatoon but of her husband Maulvi Alhaj Jamaluddin Ahmad, a teacher and a social activist, and her father Shaikh Sahju Mian who had set up a primary girls' school in Itki way back in 1922. Khatoon followed in her



father's footsteps, using her saving to buy an acre of land for Rs 85,000 for the school. Khatoon has also authored a book on her great-grandfather, freedom fighter Shaheed Sheikh Bhikari. The school, which began functioning from a three-room hut with 10 students in 1974, now has 409 students and 10 classrooms, where students can study up to class X. It follows the CBSE curriculum, has students from all communities and doesn't refuse any student. "We give our students books, uniforms and sometimes even stationery to ensure that they attend classes," says 82-year-old Khatoon. The effort Khatoon has put over the years is paying rich dividends now. This year, for instance, of the 130 students who took the class X exams, 15 students got grade I and no student failed. Of the 80 students who enrolled in class 1 this year, no student has dropped out and attendance is nearly cent per cent.

The villagers can't thank Khatoon enough for setting up her school. William Tirkey, a daily wage labourer, is one of them. His daughter Suman, who had left a government school, will now take the class X examination next year as a student of the Shamima School. Says Javed Jamal, headmaster of the Shamima School, "We lack in resources, but we take care of every student."

Khatoon, who runs the school primarily on donations, wants to get computers for the school. She is now mobilising funds from villagers. Meanwhile, she has ensured her family legacy will be carried forward. Her three sons—Aslam, Javed and Anjum Jamal—are all teachers.

Karnataka College keeps girl out for wearing headscarf

The Sri Venkatarama Swamy (SVS) College in Bantwal has restricted a first year BCom student from attending the classes till she conforms to the rules and regulations of the college, which is not to display her religious identity, the headscarf.

The student Aysha Asmin, after objections from saffron-leaning students, was told by the college management not to wear the headscarf, which she started wearing after the college had prevented her from wearing the burqa.

Aysha has not been attending the classes from past 12 days. Trouble started after the college elections. She alleged that college president Bharath started heckling her for wearing a scarf saying that they too would come wearing a saffron scarf.

"He was taken aback when I said I don't mind. I don't even mind wearing a saffron scarf", Aysha told TOI. After this, harassment continued, but Aysha was stoic till it reached a flash point when the principal told her not to attend classes. Aysha's father clarifies that he admitted his daughter to the college only after clarifying that there would be no issue for wearing a burqa in the college with a lecturer.

UAE women boost share of local jobs

UAE national women have boosted their share of the local market to a record 13.9 per cent, as they push their way into the professional sphere, official figures show.

The share of women in the country's Emirati workforce has risen steadily, from 9.6 per cent in 1985 to about 11.7 per cent in 1995 and 13.5 per cent in 2005. It stood at 13.6 per cent in 2007. The figures, released by the Ministry of Economy, show all emirates have made headway in the employment of women but it was relatively slow in Sharjah and Ajman. Ras Al Khaimah had the highest percentage of women in its workforce, standing at around 19 per cent, while Ajman had the lowest ratio of 11.5 per cent.

At the end of 2008, the total number of employable UAE nationals in the country stood at around 2.84 million, nearly 2.74 million of whom were already employed.

Analysts, however, said the steady rise in the number of women joining the labour market was one of the main reasons for the high unemployment among men.

"Many national men cannot find jobs because too many have been taken up by women, mainly in the public sector, which has become almost redundant," said an analyst. "This phenomenon has reduced unemployment among UAE women but increased it among men.

"Of course, there are other factors for their joblessness, mainly their reluctance to join the private sector."



Afghan woman candidate packs gun, wears trousers

Like many a village elder campaigning for a seat on a provincial council in rural Afghanistan, Okmina begins each day donning a black turban, strapping on a pistol and heading out to talk to neighbours.

The difference is she is a woman, dressed as a man.

Watching Okmina meet with villagers in traditional Afghan men's baggy trousers and long shirt, with a few strands of red henna-dyed hair poking out from the black turban coiled around her head, it is hard to tell she is not a man, until she speaks.

"I dress like a man, especially during this election period when security is not good," said Okmina, who, like many Afghans, uses only one name.

"For my campaigning, I have to go to remote parts in my area where it is not safe for me to go as a woman," she said laughing.

Afghanistan's constitution reserves a quarter of provincial council seats for women, guaranteeing them a role in political life, but in deeply conservative areas where women are expected to cover up and stay home, they can be a target for defying traditional roles.

- By Kamal Sadat

President's award for Muslim Woman

Twenty three scholars of Sanskrit, Pali/ Prakrit, Arabic and Persian languages were named for President's Award. Besides, six other scholars five from Sanskrit and one from Persian- have been selected for Maharishi Badrayan Vyas Samman, a government release said. Shabbir Ahmad Nadvi, Shah Abdus Salam and Abbullais Ansari have been named in Arabic category, while Rehana Khatoon, Mohd Yaseen Quddusi and Syed Mohammed Tariq Hasan have been selected for Persian. Currently she is a Professor teaching in the Department of Persian, Arts Faculty, University of Delhi.



Afghanistan: Law says husbands can starve wives who refuse sex

The repressive family law that just went into effect in Afghanistan, at least, should make us pause to consider whether there is a good outcome in that nation.

The law, a tamer version of one that caused an international outcry earlier this year, allows men to withhold food from a wife who refuses to have sex. For as long as he sees fit. That's right, husbands have been given the option of starving their wives to death.

The law also leaves a woman are right to work solely in the hands of her husband. And this is the compromise law?

The fact is, it has the tacit, at least, support of Afghan President Hamid Karzai. This is the man Afghans Congress applauded wildly five years ago. It's said his support for this family law is an attempt to gain some support among the conservative Shi'ite population that pushed it.

Saudi: Need for job-oriented courses

Suleiman Abalkhail, president of Imam Muhammad bin Saud Islamic University, has emphasized the need to introduce more job market-friendly academic programs for women in the Kingdom's public and private universities.

"The education of Saudi women is facing big challenges, especially in harmonizing between graduates and job market requirements," the president said, adding that the problem was snowballing with the establishment of new universities.

He called upon public and private universities to coordinate their efforts to focus on courses that are required by the job market and cut down on courses that have already produced a large number of graduates.

Islam: Muslims and Terrorism

By Asghar Ali Engineer

Islam is being invariably associated with terrorism both in media as well as in political circles, especially in Western countries. When they hear it being condemned by Muslim theologians, it is celebrated as something unusual. It is strange irony of both misunderstanding and motivated propaganda that if a small band of Osama's followers give call for jihad, it is taken as authentic Islamic call and if it is condemned by mainstream Islamic theologians, it is accepted with mixed feelings of celebration and skepticism. The mainstream condemnation of terrorism is somehow not accepted with conviction.

When the Darul Ulum Deoband, a leading Islamic seminary in Asia, held an anti-terrorism conference the media spotlighted it and number of articles and editorials were written in mainstream media. There was underlying skepticism that how thousands of Ulamas and imams could gather together in such large numbers, to denounce terrorism. In fact when media unceasingly targeted Islam for terrorism, these Ulamas thought it necessary to do so to convince their non-Muslim friends that Islam does not stand for terrorism.

In fact it was hardly necessary to do so as all Muslim theologians know fully well that there is no link, whatsoever, between Islam and terrorism but due to such continuing attacks, Muslim theologians had to issue a declaration condemning terrorism. Let it be noted that not only Osama bin Laden but not a single leading member of Al-Qaida is a qualified theologian. They are all modern educated youth or politicians. Among Taliban too, there is no theologian of any credible standing. Some of them may be product of madrasas in North West Frontier province of Pakistan but they never went for higher Islamic studies. They never got beyond preliminary Islamic education. It was their political bosses who decided course of action and formulated policies invoking jihad to justify their acts of terrorism.

Never any major theologian ever justified acts of terrorism. One of major Islamic thinker and theologian from West Asia issued any fatwa approving of terrorism as jihad. Yusuf Qardawi, a well-known theologian and highly respected by orthodox Muslims, condemned terrorism and suicide bombing killing of innocent people. A conference of leading Muslim scholars also condemned suicide bombing as un-Islamic. Qur'an is so clear on the issue along with Hadith literature that save on political grounds, no one can approve of acts of terrorism.

There are in all 41 verses in Qur'an on jihad and not a single verse uses it for war or violence. In early twentieth century when terrorism, like today, was not the issue, a noted scholar of Islam Maulavi Chiragh Ali wrote a scholarly book on jihad and showed that not even once word jihad has been used for war or violence in Quraan. It is really a landmark work for those who want to understand meaning of jihad in Qur'an.

The Prophet of Islam (PBUH) himself never fought any war of aggression; he fought battles only in defense. Most of the battles Prophet (PBUH) fought was in and around Madina where he had migrated to, to escape severe prosecution from his and Islam's enemies in Mecca. It is opponents of Islam who attacked Madina and Prophet fought back. He followed the injunction of the Qur'an. And fight in the way of Allah those who fight against you but be not aggressive. Surely Allah does not love aggressors. (2:190)

This Quraanic verse is self-explanatory and does not need any elaboration. How the Prophet could have violated this injunction from high on in his own lifetime? The real problem is that one fails to distinguish what is theological and what is political.

Many Muslims had their own political interests and they conveniently invoked doctrine of jihad for their political project as Osama bin Laden has been doing in our own times.

The invocation of jihad for political purposes is post-Qur'anic development. The Prophet would have never approved it. Those who kept away from political struggle for power like Sufis, gave jihad a very different meaning. According to Sufis love and peace is the basis of Islam and jihad is spiritual struggle to control one's desires. In other words, real jihad is war against one's own desires, as it is selfish desires which require human beings to resort to violence.

In fact Sufis always kept themselves away from political power struggle and believed in leading peaceful life and emphasized doctrine of sulh-i-kul (total peace and peace with all). Since they never involved themselves in political power struggle they led a simple life and busied themselves in suppressing their desires and tried to achieve what Qur'an calls nafs mutma'innah (i.e. peaceful and satisfied soul). This could be possible only if one controlled one's desires.

It was Sufi Islam, which was most popular among the masses, as Muslim masses also had nothing to do with wars for political domination. Sufis believed in controlling themselves rather than control others. One needs violence only when one wants to control others, rather than oneself. Since Sufis controlled themselves they avoided violence and politicians desire to control others and hence, justify use of violence.

All empire builders use violence and then justify it in the name of religion or patriotism or security. America today uses violence on largest scale imaginable and causes havoc because it wants to control whole world for its material resources. It attacked Afghanistan, Iraq and Vietnam before, only to control oil and other resources. And as Vietnams were forced to fight in their own way now Osama and their followers are fighting against America.

Of course there is big difference between Vietnam's fight against American aggression and Osama bin Laden's use of violence. Vietnam was a country and it was defending itself and Osama is a fugitive from Saudi, represents no country and leads a group founded by him al-Qaida and uses hit and run tactics and involves innocent citizens in his attacks. Osama has not been authorized by any country, much less by any religious authority, to attack

All leading theologians always condemned him for his terrorism. The problem with media is it never goes in depth. It has no time for it. Its news is related to events and particularly negative events. What we call investigative journalism is rare and again in depth analysis appeals to intellectuals, not to average readers. Then add to this hostile attitude, political agenda of certain vested interests, Zionist lobby in USA and USA's own justification of war of aggression against Muslim countries and one can understand why western media projects Islam as religion of jihad and terrorism.

There is great need to understand various parallel trends in the Islamic world today. Media reporting and statements of certain political leaders has developed a stereotype that Muslims are essentially jihadis and united in their fight against non-Muslims. When we are hostile to a community or a nation, we homogenize it and look for negative traits ignoring diversity and complexities.

It is no different when it comes to Islam and Muslims. Since theologians tend to speak of Islam and not Islams, a message goes that is one single understanding of Islam and all Muslims fall in line with this theological Islam. Sociological and cultural differences in

understanding of Islam are totally ignored. Apart from Sufis there are several Muslim sects who do not approve of use of violence as integral part of Islam.

It would be of great interest to know that among all other Islamic sects Ismailis consider jihad as one of the seven pillars of Islam (generally Muslims believe in five pillars) as at one time in history Ismailis were involved in long struggle for power with Abbasids and yet today Ismaili communities throughout the world are most peaceful communities. This clearly shows that violence is political, not religious necessity.

Christians too, despite Biblical doctrine of love and presenting other cheek if slapped on one cheek, came out with the theory of Holy War during crusades and the Geeta pronounced concept of dharmayuddha. We find so much violence in Buddhist countries like Sri Lanka and Thailand. Thus it would be seen that all religions talk of love and peace and all religions permit use of violence in defense. But the followers often misuse the concept of defensive violence for aggressive purposes.

Media may have its own compulsions, politicians may have their own needs, but scholars should not buy their formulations. They must fight their own prejudices and go for in depth understanding of issues. Intellectuals and scholars should be committed to quest for truth as peace and non-violence is not possible without truth. Gandhiji insisted on truth and even said truth is God in order to promote peace and no-violence.

War needs propaganda for its justification and propaganda is based on half-truths and outright lies and peace needs truth and nothing but truth. It is quest for truth which brings peace of soul " nafs-i-mutma'innah or shanty. Desire for controlling others and political power creates unrest and violence. Today Middle East is a war torn zone as it sits over unlimited source of oil. It is control over oil which tempts America to attack Arab countries and people like Osama indulge in reactive violence. Terrorism is reactive violence whereas state violence is active violence. Thus terrorism is not all about jihad but reaction to American violence for its lust for oil.

- Centre for Study of Society and
Secularism Mumbai
E-mail: csss@mtnl.net.in

Let it be noted that not only Osama bin Laden but not a single leading member of Al-Qaida is a qualified theologian. They are all modern educated youth or politicians. Among Taliban too, there is no theologian of any credible standing.

It would be seen that all religions talk of love and peace and all religions permit use of violence in defense. But the followers often misuse the concept of defensive violence for aggressive purposes.

Keeping track of community

While the government is planning to launch the national Unique Identity Card, the Dawoodi Bohras already have a similar initiative to chart every detail of community members.

Apart from information on religious taxes due from a member, the card also reveals whether its holder has accepted the oath of allegiance to their leader, Syedna Mohammed Burhanuddin, which is mandatory for all orthodox Bohras.

Recently, the Union Government announced its plans to give every Indian citizen a Unique Identity Card. Apart from addressing issues of national security, it is hoped the card will also help the government manage its social welfare schemes more efficiently. Nandan Nilekani, co-chairman of software giant Infosys, has been appointed by the government to guide the mammoth project.

While there are not many comparative schemes internationally, one religious group in the country - the Dawoodi Bohras - already have similar identity cards that chart every detail of a community member's life.

The Dawoodi Bohras, a Shia sect with 10 lakh members, are probably the only group in the country to have such an identity card. Every Bohra, including residents of obscure Gujarat villages, holds what is called ejamaat (for E-Jamaat) cards. The diaspora in East Africa, where they are largely traders - and in the rest of the world, too - are linked to their religious headquarters in Mumbai by the cards.

Apart from the name and other personal details of its holder, each bar-coded card also gives information of the Anjuman or local group that the person is a member of. The cards are used as entry passes to their mosques, mausoleums and functions. It is also used to get permissions and clearances for pilgrimages to Shia holy places in India and abroad and to access online information on community services. Since every Bohra family has to pay religious levies to local religious officers called Amil, the card also monitors collection of these taxes. Since the card system registers every birth and death in the community, it is an effective system to count their worldwide strength.

For the Bohra clergy, the card is an efficient way to monitor the religious habits of community members. The card registers every visit by a Bohra to a religious function. Apart from information on religious taxes due from a member, the card also reveals whether its holder has accepted the Misaaq or oath of allegiance to their spiritual leader, Syedna Mohammed Burhanuddin, which is mandatory for all orthodox Bohras.

Cards are issued in three colours - green, yellow and red. A member who pays all taxes and is loyal to the local priests gets a green card; an occasional rabble-rouser who pays his religious levies regularly gets a yellow card; a Bohra who is in arrears and is rebellious is given a red card. So in a way, the card is a measuring standard of a Bohra's loyalty to his spiritual leader.

- Manoj R Nair
Mumbai Mirror

In police custody

The Amil, secretary and jamaat members of Bharuch are in police custody allegedly for forcibly collecting manifold increased *wajebat*.

The Dawoodi Bohras of Bharuch are extremely poor. They stay in small, dilapidated houses and barely make two ends meet by hard labour — pulling handcarts and working as hawkers. In spite of several written requests no help has been extended to them by the jamaat.

In such a place which is hit by poverty, the Amil deputed here is Shaikh Burhanuddin who is said to be quite ruthless in nature and an extortionist. This year, he along with the jamaat secretary Husain Daruwala and other jamaat members, imposed high *wajebat* on the Bohras of this place. For example, one Abdullah bhai, who is a handcart puller, was asked to pay Rs 14,000 last year and this year was told to pay up Rs 2 lakhs!

To protest against the high-handed behaviour of the Amil, a letter was sent to the Chief Minister, Collector and DSP by H.T. Rangwala in which he threatened to immolate himself outside the jamaat office and resident of the Amil at 9.30 in the morning of 28th of Ramazan (September 17, 2009). The local administration and police acted immediately to prevent this incident and arrested the Amil, Husain Daruwala and two other prominent members of the jamaat. They also arrested Rangwala in order to prevent him from implementing his plan.

This Amil was earlier posted at Khar, Mumbai. He is originally from Godhara and most of the businessmen in Mumbai who are from Godhara are traditionally clean shaven. The Amil had once referred to them once as "dogs" and was beaten up. So he was moved to Bharuch.

खिड़की खोल दो

मई जून की झुलसा देने वाली गर्मी की एक दोपहर में लाईटें बन्द हो गईं, तो लोगों के हाल बेहाल हो गए। जिस्म पसीने में नहाने लगा। कुदरती हवाओं ने रुक जाने का अहद कर लिया तो हाथ के पंखों ने भी गोया हवा न देने की कसम ही खाली। ऐसे ही आलम में किसी छोटे बच्चे ने अपने घर की खुली खिड़की बन्द करके चटखनी लगा दी। बच्चे की इस हरकत ने हर एक को तड़पा दिया। सब चीख उठे! बोले — "भैया! खिड़की तो खोल दो। सुकून का यही तो एक ज़रिया है। अब अगर यह भी बन्द हो गई तो आराम कहाँ नसीब होगा?" लोगों की इस बात ने मुझे तड़पा दिया।

मैंने सोचा— यह खिड़की तो बन्द होने से पहले ही खोल दी जाएगी और लोगों को खातिर ख्वाह आराम भी नसीब हो जाएगा। लेकिन कब्र की उस खिड़की को खुली रखने के लिए हम क्या कर रहे हैं, जो हमारे लिए जन्नत की हवाओं का ज़रिया बन कर हमें सुकूनो चैन की बेपनाह दौलतें अता कर देगी? काश हम उस खिड़की को खोलने के लिए अभी से अपनी कोशिशें तेज़ कर दें और इस कोशिश में हम इतनी कामयाबी हासिल कर लें कि हमारे कब्र में पहुँचने से पहले ही खुदावन्दे करीम फ़रिश्तों को हुक्म दे दे कि— इसके लिए जन्नत की तरफ़ खुलने वाली खिड़की खोल दो और इसे खुश ख़बरी सुना दो कि यह क़यामत तक चैनो आराम से रहे। खुदा करे ऐसा ही हो। आमीन।

एम.के. शेख

Marriage Bureau Meet on 15 November 09

One get to-gether of Hussaini Marriage Bureau, Mumbai for Boys / Girls Matrimonial candidates are requested to attend the program that will be held at Mohammedi High School, Zumma Masjid, Trust Building Hall, Bhindi Bazar Mumbai - 3 at 4 p.m. on Sunday 15th November 2009.

Interested candidates have to present with 3 photo graphs and biodata. for more detail contact Mr. Moiz Ali Mediawala (Udaipur) & Mrs. Hussaina Bai Blockage (Mumbai)

E-mial : moizalimediwala@hotmail.com
Ph. : 0294-2451567

Editorial Board:

Editor: Razia Sanwari; Editorial Assistants: Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji

Advisory Board: Abid Adeeb; Mansoor Ali Bohra; Hussain Udaipuri; Yaqub Ali Zaheer;

Mansoor Ali Nathdwarwala; , Fazal Abbas Beawar Wala

Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

Tel: 91-294-2521719; Fax: 91-294-2524886; email: journal@dawoodi-bohras.com

Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur - 313001 Ph. : 91-294-2523830

POSTAL ADDRESS

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit <http://dawoodi-bohras.com/>

Disclaimer: The views published in this publication are solely the contributors'. The Editor and editorial board holds no responsibilities for it.